Shodh International: A Multidisciplinary International Journal (In Hindi)
Vol. 4, Issue 1 - 2019

जनजातीय संस्कृति का नया मंच सोशल मीडिया

डॉ. रामदीन त्यागी*

जनजातीय संस्कृति को समझने से पहले हमें यह जानना जरूरी है कि संस्कृति क्या है संस्कृति का सीधा-साधा अर्थ है परिष्कार या संस्कार। वस्तुत: परिमार्जित संस्कार ही संस्कृति है। इसके स्वरूप को स्पष्ट करते हुए डॉ. राम खेलावन पाण्डेय कहते हैं कि संस्कृति शब्द का प्रयोग अपेक्षाकृत अर्वाचीन है और अंग्रेजी कल्चर का समनार्थसूचक। इसकी मान्यताओं में मतभेद और विरोध है। इसकी सीमाएं एक ओर धर्म को स्पर्श करती हैं वहीं दूसरी ओर साहित्य को अपने बहुपाश में आबद्ध करती हैं। यहां हम जनजातीय संस्कृति की बात कर रहे हैं। आदिवासी शब्द दो शब्दों आदि और वासी से मिलकर बना है इसका अर्थ मूल निवासी होता है भारत की जनसंख्या का 8.6 प्रतिशत मूल निवासी यानि आदिवासी हैं जिनकी जनसंख्या 10 करोड़ के आसपास है। भारत में गोंड, मुंड, खडिया, बोडो, भील, खासी, बैगा, सहरिया, भारिया, संथाल, मीणा, उरांव, परधान, बिरहोर, पारधी, आंध, टाकणकार आदि प्रमुख वनवासी समुदाय हैं। भारतीय संविधान की पांचवी अनुसूची में अनुसूचित जनजातियों को मान्य ता दी गई है। भारत में 461 जनजातियां हैं, जिसमें से 424 जनजातीयां भारत के सात क्षेत्रों में बंटी हुई हैं।

जनजातीय संस्कृति

भारतीय समाज विभिन्न प्रजातीय समूहों का संगम स्थल रहा है। समय-समय पर भारत में विभिन्न समुदाय प्रवेश करते रहे हैं लेकिन कालान्तर में ऐसे सभी समूहों की सांस्कृतिक परम्परायें भारतीय समाज का अभिन्न अंग बन गईं। इसके पश्चात भी इनमें अनेक मानव समूह ऐसे थे जिन्होंने बाह्य सभ्यता के कुछ तत्वों को ग्रहण करने के पश्चात भी अपनी मौलिक सांस्कृतिक विशेषताओं को नष्ट नहीं होने दिया। साधारणत: ऐसे समूहों को भी हम 'जनजाति' के नाम से सम्बोधित करते हैं। ये जनजातियां प्राय: शहरी सभ्यता से बहुत दूर गहन जंगलों में, अंधेरे कोने में, पर्वतों की गगनचुम्बी चोटियों पर एवं उनकी तलहटियों में तथा पठारी क्षेत्रों में निवास करती हैं और प्रत्येक अर्थ में अत्याधिक पिछड़ी हुई है। यही कारण है कि इनको 'आदिम तथा 'खानाबदोश' मानकर इनकी लम्बे समय तक अवहेलना की जाती रही है। सामान्यत: लोग 'जनजातीय आदिवासी तथा शब्द का अर्थ 'पिछड़े हुए और 'असभ्य मानव समूह' से समझते हैं, जो कि एक सामान्य क्षेत्र में रहते हुए एक सामान्य भाषा बोलते हैं और सामान्य संस्कृति को प्रयोग में लाते हैं। वास्तव में यह प्रकृति पूजक हैं और उनका कोई कार्य नृत्य-संगीत के साथ प्रकृति पूजा के बगैर पूरा नहीं होता है। जनजातियों के मिथक, लोक कथायें, गीत, संगीत, नृत्य, धार्मिक विश्वास, उत्सव अंकरण और सौन्दर्य अभिव्यक्ति आपस में घुले मिले हुए है। यह उन्हें आपस में जोड़ने के सेतू है। जनजातीय गीतों में बहुतप्रचलित शब्द कम हो सकते है पर उन थोड़े शब्दों में भी 'विरह' और 'मिलन' की अभिव्यक्ति उतनी ही प्रभावी है, जितनी व्याकरण सम्मत भाषाओं के साहित्यिक गीतों में।

सोशल मीडिया

सोशल मीडिया एक ऐसा मीडिया है जो बाकी सारे मीडिया (प्रिंट, इलेक्ट्रानिक और समानांतर मीडिया) से अलग है।

*प्रोड्यूसर, माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल।
Correspondence E-mail Id: editor@eurekajournals.com

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

सोशल मीडिया इंटरनेट के माध्यम से एक वर्चुअल वर्ल्ड बनाता है जिसे उपयोग करने वाला व्यक्ति सोशल मीडिया के किसी प्लेटफार्म (फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम) आदि का उपयोग कर वहां पहुंच बना सकता है। यह एक विशाल नेटवर्क है जो कि सारे संसार को जोड़े रखता है। यह संसार का एक बहुत अच्छा माध्यम है। जो द्रुत गति से सूचनाओं का आदान-प्रदान करते हुए हर क्षेत्र की खबरों को समाहित करता है। यह एक ऐसा मंच है जो सुगमता से उपलब्ध है तथा व्यक्तियों, संस्थाओं, समूह और देश को आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक रूप से समृद्ध बना रहा है। जनजातीय समुदाय भी इस नवीन तकनीक का इस्तेमाल करने में अब पीछे नहीं है।

सोशल मीडिया के उपयोग से कई नवीन कार्य भी हुए हैं। देश की एकता, अंखडता, पंथ निरपेक्षता, सामाजिक गुणों में अभिवृद्धि हुई है। यह बात सच है कि कुछ स्थानों पर हुए आंदोलनों में दुर्भावनाएं सोशल मीडिया के जरिये समाज में फैलाने के प्रयास जरूर हुए हैं परंतु उन प्रयासों को सरकार व प्रशासन की सक्रियता से रोका भी गया है। ऐसे स्थानों पर शासन द्वारा सोशल मीडिया और इंटरनेट की सेवाओं पर प्रतिबंध लगाया गया है।

सोशल मीडिया से जुड़ते वनवासी

सूचना प्रौद्योगिकी में पिछले कई दशकों से इतनी तेजी से विकास हो रहा है, मानो हम प्रकाश की गति से सफर कर रहे हैं। इंटरनेट के आगमन ने पूरी दुनियां में सूचना प्रसारण में क्रांति पैदा कर दी है। इंटरनेट के साथ-साथ मोबाइल कम्प्यूटिंग ने हमारे बीच की दूरी को, इतना कम कर दिया है कि जब चाहे और जैसे चाहे हम अनेक विषयों पर अपनी बातचीत कर वैचारिक संदेशों का आदान-प्रदान कर रहे हैं। इस मोबाइल क्रांति में वनवासी अपनी संस्कृति और गीत संगीत को न सिर्फ प्रस्तुत कर रहे हैं बल्कि मजरे-टोलो में इन गीतों को अपने मोबाइल से रिकार्ड करके उसे अपने सगे-संबंधियों को मोबाइल से सुना भी रहे हैं। कई युवा यूट्यूब चैनल पर नियमित अपनी आवाज रिकार्ड करते व सुने जा सकते हैं।

नए मंच से मिला रोजगार

भारत के हृदय प्रदेश मध्यप्रदेश की हम बात करें, तो यह प्रदेश क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का दूसरा बड़ा राज्य है। जिसका क्षेत्रफल तीन लाख आठ हजार वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ है और आबादी सात करोड़ से अधिक है जिसमें 75 प्रतिशत से अधिक लोग गांवों में रहते हैं उनका मुख्य व्यवसाय खेती है जबकि अन्य लोग शहरों में रहते हैं। मध्यप्रदश की जनसंख्या का 20 प्रतिशत से अधिक हिस्सा जनजातियों का है जो मुख्य रूप से राज्य के कुल क्षेत्रफल में से 30 प्रतिशत से अधिक क्षेत्र पर बसे जंगलों पर निर्भर है। इतनी बड़ी आबादी को इंटरनेट क्रांति के जरिये सोशल मीडिया ने नए रोजगार के अवसर मुहैया कराये हैं और उन्हेंअभिव्यक्ति हेतु एक नया प्लेटफार्म मुहैया कराया है हम इन रोजगार के अवसरों को अलग-अलग दृष्टि से देखते हैं:-

(अ) सरकारी स्तर के प्रयास- मध्यप्रदेश के 51 जिलों में से 20 जिले आदिवासी बाहुल्य जिले है जिनके 89 विकास खण्ड ऐसे हैं जहां पर जनजातियों की संख्या सर्वाधिक है इन्हें आदि वासी विकास खण्ड माना गया है और यहां सरकारी स्तर पर इन वर्गों के लिए विशेष योजनायें संचालित की जाती है। राज्य सरकार द्वारा विशेष पिछड़ी जनजातीय सहरिया, बैगा और भारिया के युवाओं को आत्मनिर्भर बनाने हेतु स्वरोजगार योजनाओं में प्राथमिकता दी जा रही है तथा सरकारी नौकरियों में बिना साक्षात्कार एवं लिखित परीक्षा दिए उनका चयन करने का प्रावधान किया गया है। इससे पिछले 10 वर्षों में 1411 सहरिया, 945 बैगा और 898 भारिया युवक-युवतियों की रोजगार प्राप्तहुआ है आदिम जाति कल्याण विभाग के अलावा अन्य विभाग भी इस दिशा में निरंतर

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved.
ISSN: 2581-3501

कार्य कर रहे हैं जिसके सकारात्मक परिणाम भी मिलने लगे है।

(आ) संस्कृति विभाग के प्रयास- जनजातीय समुदाय गीत-संगीत से प्रेम करता है उनका कोई भी आयोजन बिना सांस्कृतिक प्रस्तुति के अधूरा माना जाता है। उनकी इस संगीत, नृत्य प्रतिभा को मध्यप्रदेश सरकार का संस्कृति विभाग निरंतर मंच प्रदान कर रहा है। गणतंत्र दिवस 26 जनवरी के मौके पर प्रति वर्ष सभी 51 जिलों में संस्कृति विभाग, स्वराज संस्थान संचालनालय द्वारा लोकरंग, गणतंत्र का लोकपर्व पर जनजातीय नृत्य दलों को आमंत्रित कर उन्हें मंच मुहैया कराया जाता है। इन समारोहो में यह नृत्य दल अपनी प्रतिभा के बल पर आकर्षण का केन्द्र होते है। विभाग इन्हें प्रशिक्षित भी करता है और उन्हें नृत्य प्रस्तुति करने पर मानदेय का भुगतान भी किया जाता है।

(इ) जनजातीय कार्य मंत्रालय के प्रयास- जनजातीयों के सर्वागींण विकास हेतु भारतीय संविधान की पांचवी- छटवीं अनुसूची में कई अधिकार प्रदत्त किए गए हैं। जिनका क्रियान्वयन राज्य सरकार द्वारा किया जा रहा है इसी के तहत आदिम जाति कल्याण विभाग के रचनाधर्मी उपक्रम 'वन्या' द्वारा जनजातीयों के लिए 10 आदिवासी बाहुल्य स्थानों पर वन्या सामुदायिक रेडियो संचालित किए जा रहे हैं। इन केन्द्रों के लिए वनवासी ही कार्यक्रम बनाते हैं और वे ही कार्यक्रम प्रसारित करते हैं फिर अपने मोबाइल के जरिये फिक्वेन्सी मिलाकर वन्या कम्युनिटी रेडियो द्वारा प्रसारित कार्यक्रमों को गांव टपरों में मोबाइल एवं रेडियो से सभी के बीच सुनाते है। इससे उन्हें अपने मौलिक कार्यक्रमों को प्रसारित करने का एक मंच मिलता है वहीं दूसरी ओर उन्हें आमदनी भी होता है। इसी तरह हर विभाग कई अन्य रोजगारोन्मुखी कार्यक्रम संचालित कर रहा है।

निजी स्तर पर प्रयास

1. प्रख्यात नाटककार बालेन्दु सिंह ''बालू'' ने अपनी एक नाट्य संस्था के माध्यम से जनजातीय गांव, मझले, टोलों में वन अधिकार अधिनियम का प्रचार प्रसार नुक्कड़ नाटक के माध्यम से किया। वहीं से उन्हें प्रेरणा मिली और वनवासियों के लिए मंच देते हुए कार्य करते रहे। आपके कार्य को सराहा गया और कई आयोजनों में कार्य के दौरान रोजगार के अवसर मिले। उन्हें फिल्म जगत में मौका मिला। उन्होंने 'पीकू' सहित कई फिल्मों में अभिनय किया है।
2. खरगौन के प्रवीण चौबे आज एक ब्राण्ड बन चुके हैं उनका जनजातीय गीत '' ए झमरू'' सुपरहिट गीत हो गया है वे अब 'झमरू'' फेम बन गये हैं। उन्होंने निजी प्रयास करके इस सोशल मीडिया का शानदार तरीके से लाभ उठाया है।
3. खण्डवा का ''का-का-बा का'' ना का गाना हम सबने शादी विवाह में बजते हुए सुना ही होगा। उसे एक नया मंच मोबाइल क्रांति ने दिया। इसके गायक को अच्छा खासा आर्थिक लाभ इस मंच से हुआ है।
4. सहरिया क्रांति की धूम शिवपुरी, श्योपुर कराहल क्षेत्रों में मची हुई है इस मुहिम को शिवपुरी के पत्रकार संजय बेचैन चला रहे हैं। वे उनकी आवाज सोशल मीडिया के जरिये उठा रहे है और उन्हें एक मंच प्रदान करने में सक्रिय रूप से जुटे हुए हैं।
5. प्रख्यात नाटककार संजय मेहता आज इसी नए मंच से नई ऊंचाईयां चढ़ चुके हैं उन्हें कई फिल्मों में काम मिला है वे प्रकाश झा की नजर में आये और मुम्बई तक पहुंच गए। और लगातार फिल्म एवं टीवी सीरियल में उनकी सक्रिय उपस्थिति देखी जा सकती है।
6. सीताराम आदिवासी आजकल भजन मण्डली बनाकर डिण्डौरी में धूम चमाये हुए हैं। ऐसे कई अन्य कलाकार, कथाकार एवं सामाजिक प्रतिभावान लोग है जो इस नए मंच का उपयोग कर उन्नति की नई बुलंदियां छू रहे हैं।

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

निष्कर्ष

मध्यप्रदेश के आदिवासी बाहुल जिलों में देखने में पता चलता है कि भारतीय जनजातियां अपने गांव, मझरे और टोलों में नितांत शांतिपूर्वक जीवन जी रही हैं उन्हें प्रकृति से बेहद लगाव है व अपने धर्म संस्कृति एवं सुदृढ़ वातावरण में स्वच्छन्दता मेहसूस करते हैं। जब से भारत के साथ मध्यप्रदेश में भी मोबाइल क्रांति आयी है। यह जनजातियां भी उससे जुड़ने लगीं है। आज गांव की पचास फीसदी आबादी मोबाइल के जरिये बाहरी दुनिया से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष से जुड़ चुकी है और कई स्थानों पर जो जनजातीयें युवा-युवती पढ़ लिख गए हैं उन्हें सोशल मीडिया के प्लेटफार्म या सरकारी स्तर से रोजगार के अवसर प्राप्त हों रहे हैं। सोशल प्लेटफार्म ने अतिपिछड़ी जनजातीय, सहरिया, भारिया एवं बैगा के जीवन में अमूलचूल क्रांति ला दी है। यह मंच उन्हें अच्छा लग रहा है और वे उसके अन्य फीचर का लाभ उठाने हेतु उत्सुक दिखाई देते हैं।

संदर्भ सूची

[1]. आदि संदर्भ पुस्तक माला (2012) भोपाल: वन्या प्रकाशन।

[2]. गुप्ता, रमणिका (2006) आदिवासी शौर्य एवं विद्रोह दिल्ली: प्रिंटोग्राफर्स।

[3]. चौधरी, उमा शंकर (2008) हाशिये की वैचारिकी, नई दिल्ली: अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स।

[4]. सिंह, अजय कुमार (2007) मीडिया इतिहास और हाशिये के लोग हरियाणा: आधार प्रकाशन।

[5]. दयाल, मनोज, अप्रैल-जून 2005, संथालों में मीडिया के प्रति जागरूकता, लखनऊ विश्वविद्यालय संचार।

[6]. पाल सुधीर (2007) आदिवासियों की पारम्परिक स्वशासन व्यवस्था एवं पंचायती राज नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।

[7]. Community Radio in India (2006) policy guidelines as released by the government of India.

[8]. UNESCO 2011 A Report on National consultation on community Radio New Delhi.

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501